# पीएम स्ट्रीट वेंडर की आत्मानिर्भर निधि

**(सक्सेस स्टोरी)**

## सफलता की कहानी लाभुक की जुबानी

दुर्गा सुलंकी, पति-मोती सोलंकी, चाईबासा के वार्ड नंबर 21 की निवासी हैं। उनके परिवार में कुल 5 सदस्य हैं। वह आदिवासी जनजाति समुदाय की एक सदस्य हैं। वे पिछले सात वर्षों से शहर के सुभाष चौक, टुंगरी में फुटपाथ पर समोसा-चाय की दुकान लगाकर अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही हैं। उनका पूरा परिवार इसी दुकान पर आश्रित है, परन्तु कोरोना काल में लगे पूर्ण लॉकडाउन के कारण उन्हें लंबे समय तक अपनी दुकान बंद करनी पड़ी।

इस दौरान पूरी तरह से कमाई बंद होने के कारण परिवार के खर्च को पूरा करने में उनकी सारी जमा-पूंजी खत्म हो गई। लॉकडाउन के बाद अनलॉक शुरू होने पर पूंजी का इंतजाम करना और फिर से अपना रोजगार शुरू करना मुश्किल लग रहा था। ऐसे में आगे भविष्य का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। इसी दौरान दुर्गा सुलंकी अपने शक्तिपीठ स्वयं सहायता समूह, टुंगरी की साप्ताहिक बैठक में शामिल हुई, जिसमें सीआरपी दीदी भी उपस्थित थीं। इस बैठक में दीदी द्वारा प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के तहत फुटपाथ दुकानदारों व विक्रेताओं को सरकार द्वारा ऋण दिए जाने के बारे में जानकारी मिली। इसके साथ ही उन्हें इस बात की भी जानकारी दी गई कि इस योजना के तहत स्ट्रीट वेंडर्स को अपना व्यवसाय फिर से शुरू करने के लिए बैंक की तरफ से 10,000 रुपये का आसान किस्तों में लोन दिए जाने का प्रावधान है, जिसमें सरकार की तरफ से ब्याज में 7 प्रतिशत की सब्सिडी भी दी जाती है। इस बारे में दुर्गा ने अपने पति से विचार-विमर्श कर ऋण लेने के लिए ऑनलाइन आवेदन कर दिया, जिसके उपरांत यह लोन बैंक से स्वीकृत होकर प्रदान कर दिया गया। इस लोन से उन्होंने चाय-समोसा की दुकान को फिर से शुरू कर दिया। धीरे-धीरे उनकी दुकान फिर से पहले ही जैसी चलने लगी। इससे उनके परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार होने लगा। इससे वह समय से लोन की किस्त जमा करने लगी। अब दुर्गा लोन की पूरी किस्त को जमा करने के बाद अगली बार 20,000 का लोन लेना चाहती हैं ताकि अपनी दुकान में थोड़ी पूंजी लगाकर उसका और अच्छी तरह से संचालन कर सके। दुर्गा का कहना है कि यह योजना उसके जीवन में नई उम्मीद लेकर आई है।